पोथी पढ़ि पढ़ि जग मुआ, पंडित भया न कोय,

ढाई आखर प्रेम का, पढ़े सो पंडित होय।

अर्थ : बड़ी बड़ी पुस्तकें पढ़ कर संसार में कितने ही लोग मृत्यु के द्वार पहुँच गए, पर सभी विद्वान न हो सके. कबीर मानते हैं कि यदि कोई प्रेम या प्यार के केवल ढाई अक्षर ही अच्छी तरह पढ़ ले, अर्थात प्यार का वास्तविक रूप पहचान ले तो वही सच्चा ज्ञानी होगा.

माला फेरत जुग भया, फिरा न मनका फेर ।

कर का मन का डार दे, मन का मनका फेर ।।

अर्थ : लोग सदियो तक मन की शांति के लिए माला हाथ में लेकर भगवान का नाम जपते है । लेकिन फिर भी उनका मन शांत नही होता । कबीरदास जी कहते है कि माला को जप कर मन में शांति ढूँढने के बजाय अपने मन में शुद्ध विचार भरो , मन के मोतियों को बदलो अर्थात सद्विचार ग्रहण करो। बेकार के पाखण्ड से दूर रहो ।

साधू ऐसा चाहिए, जैसा सूप सुभाय।

सार–सार को गहि रहै, थोथा दे उड़ाय ।।

अर्थ : इस संसार में ऐसे सज्जनों की आवश्यकता है ,जैसे अनाज साफ़ करने वाला सूप होता है ।जो साफ़ सुथरी चीजों को बचा लेता है और बेकार चीजों को उड़ा देते है ।

गुरु गोविंद दोउ खड़े काको लागूं पाय ।

बलिहारी गुरु आपने, गोविंन्द दियो बताय ।।

अर्थ:हमारे सामने गुरु और ईश्वर दोनों एक साथ खड़े है तो आप किसके चरणस्पर्श करेगे ।गुरु ने अपने ज्ञान के द्वारा हमे ईश्वर से मिलने का रास्ता बताया है ।इसलिए गुरु की महिमा ईश्वर से भी ऊपर है ।अतः हमे गुरु का चरणस्पर्श करना चाहिए ।

कस्तूरी कुंडल बसे,मृग ढूँढत बन माही।

ज्योज्यो घट– घट राम है,दुनिया देखें नाही ।।

अर्थ : कबीर दास जी ईश्वर की महत्ता बताते हुये कहते है कि कस्तूरी हिरण की नाभि में होता है ,लेकिन इससे वो अनजान हिरन उसके सुगन्ध के कारण पूरे जगत में ढूँढता फिरता है ।ठीक इसी प्रकार से ईश्वर भी प्रत्येक मनुष्य के ह्रदय में निवास करते है ,परन्तु मनुष्य इसें नही देख पाता । वह ईश्वर को मंदिर ,मस्जिद, और तीर्थस्थानों में ढूँढता रहता है ।

यह तन विष की बेल री, गुरु अमृत की खान

अर्थ – कबीर दास जी कहते हैं कि यह जो शरीर है वो विष (जहर) से भरा हुआ है और गुरु अमृत की खान हैं। अगर अपना शीश(सर) देने के बदले में आपको कोई सच्चा गुरु मिले तो ये सौदा भी बहुत सस्ता है.